प्राक्कथन

प्राक्कथन

हिंदी साहित्य के प्रति मेरी आरंभ से ही रुचि रही है। एम्.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण होने के पश्चात मेरे मन में शोध कार्य करने की एक मात्र उत्कट इच्छा थी।इस इच्छा को सार्थकता में परिवर्तित करने के लिए अनुकूल विषय का होना अनिवार्य था। एम.ए. के अध्ययन के दरम्यान मैने अनेक उपन्यास पढ़े, जिनमें यशपाल का 'झूठा सच', कमलेश्वर का 'कितने पाकिस्तान' पढ़ा साथ ही जब मैंने नासिरा शर्मा के 'जिंदा मुहावरे' उपन्यास पढ़ा इस अध्ययन के पश्चात मुझे लगा नासिरा शर्मा जी के 'जिंदा मुहावरे' उपन्यास मानवीय चेतना की दास्तान है। भारतीय और पाकिस्तान मुस्लिमों के दर्द को बड़ी आत्मीयता और संवेदना के साथ लेखिका ने चित्रित किया है। इसमें कोई सन्देह नही है।

नासिरा शर्मा जी के इस उपन्यास से प्रभावित होकर मैने आदरणीय गुरूवर्य डॉ.सरदार मुजावर जी से विचार विमर्श करने के पश्चात उन्होंने इस विधा पर कार्य करने की मुझे अनुमति दे दी। और मैंने नासिरा शर्मा जी के 'जिंदा मुहावरे' इस उपन्यास का चयन कर के अपने शोध कार्य के लिए **"सांप्रदायिकता के संदर्भ में जिंदा मुहावरे' का मूल्यांकन"** इस विषय का चयन कर लघु शोध प्रबंध संपन्न करने का विनम्र प्रयास किया है।

शोध विषय का महत्त्व :

उपर्युक्त शोध कार्य को देखने के पश्चात स्पष्ट होता है कि मेरी जानकारी के अनुसार **"सांप्रदायिकता के संदर्भ में 'जिंदा मुहावरे' का मूल्यांकन"** इस विषय को लेकर किसी भी शोध कर्ता ने अनुसंधान नहीं किया। मेरे प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की रचना इस अभाव की पूर्ति का सविनय प्रयास है।

शोध कार्य के दौरान उभरे प्रश्न :

अनुसंधान के प्रारंभ में मेरे मन में नासिरा शर्मा जी के उपन्यास के बारे में निम्नांकित प्रश्न उपस्थित हुए थे, वे इस प्रकार है -

1. नासिरा शर्मा जी का व्यक्तित्व किस तरह का है?
2. नासिरा शर्मा के साहित्य की युग पृष्ठभूमि किस तरह की है?
3. नासिरा शर्मा के उपन्यास में आधुनिकता की कौन कौन सी विशेषताएँ है?
4. नासिरा शर्मा के उपन्यास साहित्य पर किन विचारधाराओं का प्रभाव रहा होगा?
5. नासिरा शर्मा के उपन्यास में मौलिकता तथा मूलतत्व क्या है?
6. नासिरा शर्मा के उपन्यास में कौन कौन सी समस्याएँ है?

शोध प्रबंध की व्याप्ति :

लघु शोध प्रबंध की सीमा निश्चित हो तो कार्य सही दिशा में तथा सुनियोजित होता है। इसी नियम को ध्यान में रखते हुए मैंने अपने लघु-शोध प्रबंध की सीमा निश्चित की है। अध्ययन की सुविधा के लिए मैने लघु शोध प्रबंध को पाँच अध्यायों में विभाजित कर विषय का विवेचन और विश्लेषण किया है।

प्रथम अध्याय : नासिरा शर्मा जीवन परिचय तथा रचना संसार।

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत नासिरा शर्मा के जन्म से लेकर उनके रचना संसार तक को अंकित किया है, जिसमें जन्म, माता-पिता, परिवार, विवाह, रहन-सहन, पारिवारिक स्थिति, व्यक्तित्व के पहलू साथ ही कृतित्व में नासिरा शर्मा जी के रचना संसार के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी है। तथा साहित्यिक विशेषताओं से सम्मानित पुरस्कारों का विवरण दिया जाएगा।

द्वितीय अध्याय : 'जिंदा मुहावरे' उपन्यास में चित्रित सांप्रदायिकता

'जिंदा मुहावरे' उपन्यास में चित्रित सांप्रदायिकता। प्रस्तुत अध्याय के

अंतर्गत इस उपन्यास में चित्रित सांप्रदायिकता को परखा गया है। 'जिंदा मुहावरे' में चित्रित सांप्रदायिकता शब्द का अर्थ, सांप्रदायिकता का स्वरूप, शब्द कि परिभाषा, सांप्रदायिक यथार्थ से तात्पर्य उपन्यास में चित्रित सांप्रदायिकता के रूप दंगे-फसाद धर्म के नाम पर राजनीति तथा सांप्रदायिकता के परिणाम स्वरूप को प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय : 'जिंदा मुहावरे' उपन्यास में चित्रित समस्याएँ

प्रस्तुत उपन्यास के अंतर्गत उपन्यास से संबंधीत अनेक समस्याएँ चित्रित की गई हैं। इसमें जातिभेद की समस्या, धार्मिक क्षेत्र में अनाचार, पारिवारिक समस्या, भ्रष्टाचार की समस्या, मुस्लिमों की समस्या, सांप्रदायिक की समस्या धर्माधता, शिक्षा, विवाह, नारी आदि समस्याओं का भी चित्रण किया है। धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक तथा मुस्लिम परिवार की अन्दरूनी जिंदगी उनके उनके रीतिरिवाज सामाजिक समस्याओं का भी चित्रण किया है।

चतुर्थ अध्याय : 'जिंदा मुहावरे' उपन्यास की विशेषताएँ

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत उपन्यास की विशेषताओं का विवरण दिया है। उपन्यास का अर्थ, स्वरूप परिभाषा का विस्तृत विवेचन दिया है। जिसमें सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा बदलते पारिवारीक संदर्भ की विशेषताओं के साथ-साथ प्रस्तुत उपन्यास की कथावस्तु को विशद किया है। कथावस्तु का समाज जीवन से जुड़ाव मुस्लिम जीवन की पीड़ा आदि का संक्षिप्त रूप में विवेचन किया है।

पंचम अध्याय : 'जिंदा मुहावरे' उपन्यास का शैल्पिक विवेचन

प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत उपन्यास का शिल्पगत अध्ययन किया है। प्रस्तुत अध्याय में भाषा का स्वरूप एवं महत्व स्पष्ट करते हुए उपन्यास में विविध शब्दों के प्रयोग में तत्सम शब्द, तद्भव शब्द, देशज शब्द, विदेशी शब्द, अरबी शब्द, फारसी शब्द, अंग्रेजी शब्द, संस्कृत शब्द, ध्वन्यार्थक शब्द, निरर्थक शब्द आदि का विवरण किया है। साथ ही भाषा के सौदर्य के अंतर्गत पात्रानुकूल भाषा, कथनात्मक भाषा, मुहावरे एवं सुक्तियों आदि का विवेचन तथा विश्लेषण किया है।

भाषिक अध्ययन के साथ-साथ शैली का भी विस्तृत विवेचन किया गया है। जिसमें शैली का अर्थ, स्वरूप, महत्त्व के साथ वर्णनात्मक, आत्मकथनात्मक, संवादात्मक शैली का विस्तृत विवेचन इस शिल्पगत अध्ययन में प्रस्तुत किया है। नासिरा शर्मा प्रगतिशील विचारों की लेखिका है। जो मनुष्यता को धर्म, संप्रदाय या विचार धारा से ऊपर मानती है।

उपसंहार :

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध में पूर्व विवेचित तथा नियोजित अध्यायों के वैज्ञानिक पद्धति से अध्ययन करने के उपरान्त जो निष्कर्ष प्राप्त हुए है इनको 'उपसंहार' के रूप में दर्ज किया है। उपसंहार के अंत में आधार ग्रंथ सूची, और संदर्भ ग्रंथ सूची दी है।

शोध कार्य की मौलिकता :

नासिरा शर्मा जी के प्रस्तुत उपन्यास के आधार पर 'सांप्रदायिकता के संदर्भ में 'जिंदा मुहावरे' का मूल्यांकन"इस विषय पर आज तक किसी भी शोध कर्ता ने अनुसंधान कार्य नहीं किया है।हिंदी अनुसंधान क्षेत्र में यह अभाव का द्योतक है।यह लघु शोध प्रबंध इस अभाव की पूर्ति की दृष्टि से विशेष महत्व रखता है।प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में सांप्रदायिकता का मौलिक विवेचन तथा विश्लेषण किया है।

1 नासिरा शर्मा जी के उपन्यास में मुस्लिम समाज जीवन का सूक्ष्मता और गहराई के साथ चिंतन किया है।

2 विवेच्य उपन्यास में देश के अलगाव बोध का सुंदर समन्वय मिलता है।

3 विवेच्य उपन्यास में भारतीय मुस्लिम जीवन तथा पाकिस्तान के मुस्लिम परिवेश का चित्रण को उजागार किया है।

ऋणनिर्देश

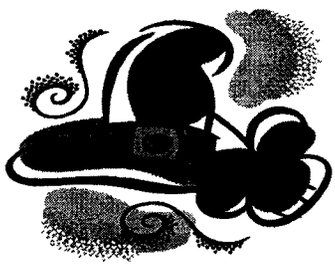

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को सफल बनाने में जिन विद्वानों का एवं स्नेहियों का का प्रोत्साहन एवं सहयोग मिला उन सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं केवल औपचारिकता न समझकर आद्य कर्तव्य समझता हूँ।

मैं सर्व प्रथम अपने आदरणीय गुरुवर्य डॉ.सरदार मुजावर जी के प्रति कृतज्ञ हूँ, जिनके अमूल्य मार्गदर्शन में अपना शोध कार्य पूरा कर सका। गुरू के साथ एक शुभचिंतक के रूप में भी आपने मुझे प्रेरित, प्रोत्साहित किया। आपके कृपापूर्ण आत्मीय एवं कुशल निर्देशक का यह फल है। मैं आप तथा आपके परिवार के प्रति सहृदय से कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। आदरणीय गुरुवर्य डॉ.अर्जुन चव्हाण सर जी ने समय समय पर मुझे मार्गदर्शन किया, निश्चय ही आपकी सदिच्छा मेरे लिए प्रेरणा स्त्रोत बनकर मुझ में अनोखी शक्ती भरती रही। साथ ही हिंदी विभागाध्यक्षा डॉ.पद्मा पाटील, डॉ.शोभा निंबाळकर तथा अब तक के शिक्षा जीवन में जिन गुरुजनों की सदिच्छा तथा प्रेरणा मिलती गई उन सभी के प्रति मैं कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

मेरे जीवन का कार्य माता-पिता के बिना संपन्न नहीं हुआ है। **माता-शमशाद, पिता-ईकबाल** तथा मेरी नानी **माँ-मौलनबी** इनके शुभाशिर्वाद का यह फल है कि मैं अपने कार्य की पूर्ति में सफल हुआ हूँ। आज मै जो भी हूँ उन्हीं के बदौलत हूँ। उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना परम कर्तव्य समझता हूँ। मेरी बहन **नाझनीन**, बहनोई-**कमाल**, भांजी-**गाझिया** के प्यार और इनके प्रेरणा से कार्य को सफलता प्राप्त हुई। साथ ही छोटी बहनों में **जस्मीन, आफ्रीन** इन का प्यार आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता रहा। स्वर्गीय दादाजी **ईमामसो** इन्होंने शिक्षा कि राह दिखाई तथा मेरी दादी **राजाबी** जो हमेशा मेरी हितचिंतक रही हैं। मेरे चाचा, चाची के सदिच्छा तथा सहयोग का यह फल है साथ हि चचेरे भाई-बहनों को कैसे भुल सकता हूँ? उनका प्यार हमेशा मेरे

साथ रहा है। मेरे फूफी-फूफाओं का शुभाशिर्वाद हमेशा रहा है। फूफेरे भाई-बहनों, मुमेरे भाई-बहनों आगे बढ़ने की प्रेरणा साथ हि मामा-मामी इन सभी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।

मेरे मित्र परिवार मे जिनका मुझे इस कार्य के लिए हमेशा सहयोग मिलता गया। उन की प्रेरणा, प्यार मेरे कार्य को आगे बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण है ऐसे अनगिणत मित्रों तथा मेरे भवन बंधुओं साथ हि सहेलियों में **विद्या पाटील, कांचन, सुजाता** और **स्मिता** इनके प्यार, प्रेरणा से कार्य कों सफलता प्राप्त हुई है।

बॅ.बाळासाहेब खर्डेकर ग्रंथालय, कोल्हापुर इस ग्रंथालय में जिनका मुझे प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप में सहयोग प्राप्त हुआ जिनमें **मातेकर** सर, **खामकर** सर, **बिलावर** सर, **पाटील** मॅडम, **सुर्यवंशी** मॅडम तथा मदतनीस के रूप में कवठे सर, दिंडे सर, जाधव, रसाळ, पाटील, साठे सर इन सभी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। साथ हि लाल बहादूर शास्त्री कॉलेज के ग्रंथालय और गुरूजनों के प्रति आभार प्रकट करता हूँ।

अध्ययन के हेतु जिन संदर्भ ग्रंथों की सहायता ली उन रचनाकारों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना धर्म मानता हूँ। तथा इस शोध प्रबंध कार्य को सुचारू रूप से टंकन करनेवाले **श्री.अविनाश कांबळे** और **अरूण कांबळे** जी का मैं आभारी हूँ। जाने-अनजाने में जिस किसी सहयोगी का नाम लिखना रह गया हो उन सभी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर मैं अपना लघु शोध-प्रबंध प्ररिक्षणार्थ के लिए रखता हूँ।

स्थान : सातारा।

तिथि :

शोध-छात्र

(श्री. जाकिर ईकबाल काझी)